प्रेस विज्ञप्ति

अभाव ग्रसित जबड़े और चेहरे वाले मरीज़ों का के0जी0एम0यू0 में नवीनतम इलाज

प्रॉस्थोडॉन्टिक्स विभाग, के0जी0एम0यू0 ने 8 सितम्बर, 2018 को मैक्सिलोफेशियल प्रॉस्थोडॉन्टिक्स पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया।

कार्यशाला के वक्ता टाटा मेमोरियल कैंसर अस्पताल (जो भारत का प्रमुख और सबसे बड़ा कैंसर उपचार अस्पताल है) के डेन्टल और प्रास्थेटिक सर्विसेज की विभागाध्यक्ष प्रोफेसर कंचन ढोलम एवं सहयोगी थे।

के0जी0एम0यू0 के प्रॉस्थोडॉन्टिक्स विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर पूरन चंद ने कहा कि अनियमित जीवन शैली एवं कम उम्र से ही पान मसाला, बीड़ी, सिगरेट आदि के बढ़ते उपयोग से भारत में मुख और जबड़े का कैंसर सबसे तेज़ी से फैल रहा है। ऐसे मरीज़ों का सामान्य उपचार सर्जरी रेडिएशन एवं कीमोथेरेपी है, जिससे चेहरे या जबड़े में विकृति या अभाव हो जाते हैं।

विभागाध्यक्ष ने कहा ''हालांकि, सर्जरी रोगी के जीवन को बचा सकती है, परन्तु इन अभावों से जीवन की गुणवत्ता गंभीर रूप से बाधित हो जाती है, सामान्य जीवन–याचिका के कार्य जैसे बोलना, मुस्कुराना, निगलना, चबाना और भोजन खाने सभी पर प्रतिकूल असर पड़ता है।''

प्रोफेसर ढोलम ने कहा, ''ऐसे मरीज़ों को डिप्रेशन हो सकता है, उनका सामाजिक बहिष्कार हो जाता है और कभी–कभी ऐसे मरीज़ खुद को समाज से दूर कर लेते हैं।''

कुलपति प्रोफेसर एम0एल0बी0 भट्ट ने कहा कि कार्यशाला ने प्रॉस्थोडॉन्टिस्ट्स को ऐसे मरीज़ों के प्रास्थैटिक उपचार एवं पुनर्वास के बारे में महत्वपूर्ण और नई जानकारी प्रदान करी। उन्होंने कहा कि यह गर्व का विषय है कि के0जी0एम0यू0 उत्तर भारत में मैक्सिलोफेशियल कृत्रिम उपचार के लिये सबसे बड़े और उन्नत केन्द्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि यहाँ पर अधिकांश उपचार कैंसर रोगियों को मुफ्त में प्रदान किये जाते हैं।

आयोजन सचिव प्रोफेसर सौम्येन्द्र वि0 सिंह ने कहा कि मुख और जबड़े के कैंसर के मरीज़ों को समाज में पुर्नस्थापित करने एवं आत्म विश्वास लौटाने के लिये मैक्सिलोफेशियल कृत्रिम पुनर्वास (नकली जबड़े व उनके अवयव) महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि कार्यशाला ने इम्पलान्ट में प्रशिक्षण प्रदान किया है ताकि ऐसे मरीज़ों का अधिक तेज़ी, सुनिश्चित्ता एवं सुविधा से उच्चस्तरीय पुनर्वास हो सके।

उनका कथन था कि चेहरे के अभाव एवं विकृति के लिये इस समय यह सर्वोच्च पद्धति है।

साईन्टिफिक सचिव डा0 दीक्षा आर्या ने कहा कि कार्यशाला 200 से अधिक विशेषज्ञ उपस्थिति के साथ भारत में मैक्सिलोफेशियल प्रॉस्थोडॉन्टिक्स की सबसे बड़ी कार्यशालाओं में से एक थी। मुख और जबड़े के कैंसर रोगियों के प्रास्थेटिक पुनर्वास के विभिन्न पहलुओं पर डाक्टरों द्वारा लगभग 40 शोध प्रस्तुतियाँ दी गयीं।